Dr. Raman Kumar Thakur

Assistant professor (Guest) Department of Economics, D.B.College, jaynagar.

Class:-B.A.part-2(Hons) Gen & Subsidiary) Date :-04-08-2020.Lecture N:- 02

Topic:- कुटीर एवं लघु उद्योगों की समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव(Suggestions for solving the problems of Cottage and small scale Industries):- सरकार के तरफ से लघु एवं कुटीर उद्योगों की समस्याओं की ओर उचित ध्यान दिया जा रहा है, लेकिन फिर भी भावी विकास की दृष्टि से कुटीर एवं लघु उद्योग की समस्याओं के समाधान हेतु निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं :-

1) उत्पादन तकनीक में सुधार(Improvement in production Techniques):-कुटीर एवं लघु उद्योगों की उत्पादन में सुधार किया जाना चाहिए,तभी ये उद्योग बड़े उद्योगों की प्रतियोगिता का सामना करते हुए उपभोक्ताओं को अच्छी सेवाएं उपलब्ध करा सकेंगे है ।

2) अनुसंधान कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान(Special Emphasis on Research programme):-लघु उद्योग की उत्पादकता बढ़ाने और वस्तुओं की किस्म में सुधार करने की दृष्टि से अनुसंधान कार्यक्रमों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

3) सलाहकार फर्मों की व्यवस्था(Establishment of Consultancy Firms):-पर्याप्त सलाहकार की व्यवस्था की जानी चाहिए जो लघु उद्योगों की स्थापना करने, विकास करने और मशीनों इत्यादि के संबंध में अपना परामर्श दें सके।

4) कृषि पदार्थों का विधायन(Processing of Agricultural Goods):-बड़ी संख्या में लोगों को पूर्णकालिक रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए औद्योगिक इकाइयों की स्थापना की जानी चाहिए। इन उद्योगों में कपास, जिनिंग दूध ,आदि का विधायन, तेल निकालना जूट के सामान का निर्माण करना, खांडसारी आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

5) विशेष कोष (special Fund):-सरकार को यह प्रावधान बना देना चाहिए कि प्रत्येक लघु इकाई अपनी वार्षिक आय का 10% एक विशेष कोष में स्थानांतरित करें जिसका उपयोग आधुनिकीकरण के कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने के लिए किया जाए।

6) कृषि के उत्पादन का प्रयोग करने वाले उद्योग(industries Using Agricultural production):-कुटीर एवं लघु उद्योगों के विकास के लिए यह आवश्यक है कि कृषि के गुण उत्पादन का निर्माण उद्योगों में कच्चे माल के रूप में प्रयोग करने के संबंध में तकनीकों का विकास किया जाना चाहिए ।

7). उचित समन्वय (proper Co-Ordinations):- जहां तक संभव हो सके विशाल एवं लघु उद्योगों में उचित समन्वय स्थापित किया जाना चाहिए।

8). कच्चे माल की पूर्ति(Supply of Raw material):- लघु उद्योगों को कच्चे माल की निरंतर पूर्ति मिलते रहने के लिए विशेष प्रयत्न किए जाने चाहिए।

9). साख सुविधाएं(Credit Facilities):- लघु उद्योगों को बैंकों द्वारा दिए जाने वाले ऋणो के लिए जमानत तथा गारंटी की जरूरत पड़ती है। इसके फलस्वरुप बहुत कम उद्योग इन ऋणो का लाभ उठा पाते हैं। इन बैंकों को लघु उद्योग की संभावित साख शक्ति के अनुसार ऋण देने चाहिए।